Rousseau: Social Contract Theory

रूसो (Rousseaue) राजनीतिक चिन्तन के संविदावाद के युग का अंतिम विचारक है। 17वीं सदी के लगभग सभी राजनीतिक विचारक इसी श्रेणी में आते हैं। परन्तु उनमें से Hobbes तथा लॉक ने संविदा सिद्धान्त को एक क्रमबद्ध रूप में व्यक्त करके इस सिद्धान्त के प्रमुख विचारकों की श्रेणी प्राप्त की है। 18th Century में Montesque ने इस सिद्धान्त की परम्परा को छोड़ दिया था, परन्तु रूसो के दर्शन में पुनः संविदावाद के दर्शन होते हैं।

रूसो ने अपने ग्रन्थ सामाजिक अनुबन्ध (Social Contract) में सामाजिक समझौता सिद्धान्त का विस्तृत उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है:

1 मानव स्वभाव - Hobbes तथा Locke से अलग रूसो मानव स्वभाव का चित्रण करता है। वह मानव स्वभाव को न तो हॉब्स की तरह क्रूर, झगड़ालू और स्वार्थी मानता है और न लॉक के अनुसार उसे शान्तिप्रिय, परोपकारी और सद्गुणी मानता है। क्योंकि रूसो का मत है कि प्राकृतिक अवस्था के व्यक्तियों का जीवन बुद्धि द्वारा चालित न होकर भावनाओं द्वारा चालित था और ये भाव मुख्यतया दो थे - प्रथम, आत्मरक्षा तथा सुख की प्रवृत्ति और द्वितीय दया। रूसो का मानना है कि मानव नैतिकता के विचारों से रहित और सहज भावना से काम करनेवाला बुद्धिहीन प्राणी था। उसी के शब्दों में वह एक Noble Savage था।

2 प्राकृतिक अवस्था - मानव स्वभाव के चित्रण की तरह Rousseau प्राकृतिक अवस्था का चित्रण भी Hobbes तथा Locke के विपरीत करता है। रूसो का मानना है कि प्राकृतिक अवस्था में मानव जीवन शांत, सरल, संतुष्ट और सुखमय था। मानव प्राकृतिक अवस्था में स्वच्छन्द जीवन व्यतीत करता था। वह अपने वर्तमान से संतुष्ट और भविष्य के प्रति निश्चिन्त था। यह प्राकृतिक अवस्था जंगलीपन की अवस्था अवश्य थी, पर वह उत्कृष्ट जंगली (Noble Savage) था, उसमें सरल मनुष्य के

Scanned with CamScanner

सुरक्षा नहीं थी। इस प्रकार आदिम प्राकृतिक अवस्था आदर्श थी। ~~लेकिन बाद~~

~~लेकिन बाद, जनसंख्या की वृद्धि के कारण~~ ~~भौतिक जिन-जिन कारणों से~~ जो भी हो, जनसंख्या की वृद्धि और सभ्यता के विकास के कारण, प्राकृतिक अवस्था दूषित हो गई। सम्पत्ति के विकास के कारण तथा यह मेरा है, यह तेरा है के कारण लोगों की सुख-शान्ति काफूर हो गई। व्यक्तिगत सम्पत्ति की इस धारणा के कारण प्राकृतिक अवस्था में तीव्र संघर्ष प्रारम्भ हो गया।

- सामाजिक समझौता या अनुबन्ध - स्पष्ट है कि मनुष्य की स्वतंत्रता परतन्त्रता में बदल गयी। रूसो ने ठीक ही कहा है कि "मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है लेकिन वह प्रत्येक स्थान पर बंधनग्रस्त है। मनुष्य अपनी इस बंधनग्रस्तता की स्थिति को समाप्त कर और पुन: स्वतंत्रता की स्थिति को प्राप्त करने के लिए ही सामाजिक समझौते का आश्रय लिया। रूसो का सामाजिक समझौता हॉब्स तथा Locke से अलग है। रूसो का मानना है कि प्रत्येक "प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को सभी को समर्पित करते हुए किसी को भी व्यक्तिगत रूप से कुछ भी समर्पित नहीं करता है। अत: कोई ऐसा सदस्य नहीं होता जो वह दूसरों पर उन्हीं अधिकारों को प्राप्त नहीं करता जो कि वह अपने पर दूसरों को देता है। इस तरह वह जो कुछ गँवाता है, उसी के बराबर पुन: प्राप्त कर लेता है और अपनी वस्तुओं की सुरक्षा में वृद्धि कर लेता है।" रूसो ने इसे आगे स्पष्ट करते हुए कहता है कि "जो कुछ समझौता के द्वारा मानव खोता है, वह है प्राकृतिक स्वतंत्रता और किसी भी वस्तु को प्राप्त करने का असीमित अधिकार तथा वह जो कुछ पाता है वह है, सामाजिक स्वतंत्रता और अपनी वस्तुओं पर स्वामित्व।"

इस प्रकार रूसो के सामाजिक समझौते ~~काविश्लेषण~~ के आधार पर हम उनकी विशेषताओं

Scanned with CamScanner

को निम्न रूप से देख सकते हैं:

(i) समझौते किसी व्यक्ति या व्यक्ति समूह के बीच न होकर, व्यक्ति के वैयक्तिक सामूहिक पक्ष के मध्य होता है। व्यक्ति वैयक्तिक आधार पर जो कुछ खोता है, वह सामूहिक आधार पर समूह का सदस्य होने के नाते पुनः प्राप्त कर लेता है।

(ii) समझौते से व्यक्ति की स्वतंत्रता सीमित नहीं होती, बल्कि, वह 'सामान्य इच्छा' (General will) के निर्देशों के अनुसार कार्य कर वास्तविक रूप से उसका उपयोग करने का अधिकार प्राप्त कर लेता है।

(iii) समझौते से 'सामान्य इच्छा' का निर्माण होता है जो सदैव शुभ और लोककल्याणकारी प्रवृत्ति की होती है। यह 'सामान्य इच्छा' ही राज्य की सम्प्रभु शक्ति की प्रतीक होती है, अतः जिसके अनुसार व्यक्ति और राज्य के कार्यों का संचालन होता है।

(iv) समझौता व्यक्ति की स्थिति में मौलिक अन्तर पैदा कर देता है। व्यक्ति के आचरण को निर्धारित और निर्देशित करनेवाला तत्व उसकी प्राकृतिक स्थिति के बजाय उसकी सामाजिक स्थिति बन जाता है। उसकी यह सामाजिक स्थिति उसकी न्यायशीलता का प्रतीक होती है। अतः उसको नैतिक व्यक्तित्व एक नैतिक स्थिति और गरिमा प्राप्त कर लेता है जिसका प्राकृतिक दशा में पूर्ण अभाव था।

(v) रूसो केवल सामाजिक समझौते का समर्थन करता है किसी राजनीतिक समझौते का नहीं। अतः समझौते से किसी राज्य या शासन-व्यवस्था की स्थापना नहीं होती वरन् 'सामान्य इच्छा' पर आधारित सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाज व्यवस्था की स्थापना होती है। शासन व्यवस्था उसके द्वारा नियुक्त एक साधन मात्र होती है जिसका उद्देश्य "सामान्य इच्छा" को मूर्त रूप प्रदान करना है और उसके निर्देशों के अनुसार कार्य करता है।

जो भी हो रूसो के समझौता सिद्धान्त एक ऐसे लोकतांत्रिक समाज की स्थापना होती है जिसके अन्तर्गत सम्प्रभुता सम्पूर्ण समाज में निहित होती है तथा जिसके शासन का संचालन

सर्वहितकारी 'सामान्य इच्छा' के निर्देशों के अनुसार होता है।

स्पष्ट है कि रूसो द्वारा प्रतिपादित सामाजिक समझौता सिद्धान्त बड़ा आकर्षक और लोकतंत्रवाद का प्रतीक दृष्टिगत होता है। किन्तु आलोचकों ने इसकी आलोचना करते हुए कहा है कि रूसो की प्राकृतिक अवस्था काल्पनिक है। रूसो का समझौता भी विरोधाभासी है। यह सामाजिक प्रगति के सिद्धान्त का विरोधी है। समझौते से व्यक्ति की स्थिति हास्यास्पद हो जाती है। नागरिक के रूप में वह शासक है और आज्ञापालक के रूप में प्रजा। आलोचकों का मानना है कि राज्य किसी समझौते का परिणाम नहीं, उसकी उत्पत्ति में रक्त सम्बन्ध, धर्म, शक्ति तथा मनुष्य की ~~सामाजिक~~ राजनीतिक चेतना आदि तत्वों ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। आलोचकों ने तो यहाँ तक कहा है कि रूसो व्यक्ति को 'सामान्य इच्छा' की निरंकुशता के हवाले कर दिया है।

जो भी हो, रूसो के सामाजिक समझौता के सिद्धान्त का आधुनिक युग के राजनीतिक चिन्तन और उसके विकास पर गहरा प्रभाव ~~पड़ा है~~ डाला है। समझौते के माध्यम से उसके द्वारा प्रतिपादित 'सामान्य इच्छा' के सिद्धान्त जनतंत्र या जनसहमति पर आधारित शासन व्यवस्था के आधुनिक विचार को गहरे रूप से प्रभावित किया है। रूसो का राजनीतिक चिन्तन ही था, जिसने फ्रांस की राज्यक्रान्ति को स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व का नारा प्रदान किया। एक क्रान्तिकारी विचारक के रूप में मानव जाति पर रूसो का प्रभाव बेजोड़ रहा है।